वसंत वैली पत्रिका

रंगमंच व शिक्षा

आदि मानव जब बोल भी नहीं सकता था तब भी वह अपने मन की बात अपने हाव-भाव यानि नाटक द्वारा प्रस्तुत करने की क्षमता रखता था। हर व्यक्ति को अपने सोच विचार प्रकट करने की चाह होती है। कुछ लोग अपने विचार बोल कर प्रकट करते हैं, कुछ लिखित शब्दों के द्वारा, कुछ संगीत और नृत्य द्वारा प्रकट करते हैं। इसी अभिव्यक्ति का एक माध्यम नाटक है। नाट्यशास्त्र केवल भारतीय इतिहास ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का एक महत्वपूर्ण भाग है। ग्रीस हो या रोम, भारत या इंगलैंड, नाटक ने अपने लिए एक अहम जगह बना ली है। इंगलैंड का ग्लोब थिएटर और मध्यकालीन भारतीय राज-दरबार अनेक स्थानों में से केवल दो स्थान हैं जहाँ पर नाट्यशास्त्र की बहुत चर्चा की जाती है। नाट्य द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के विषय प्रस्तुत किए जाते हैं। कुछ नाटक ऐतिहासिक होते हैं तो कुछ हास्यप्रधान नाटक होते हैं। कुछ भावनाओं पर ज़्यादा ज़ोर डालते हैं तो कुछ घटनाओं पर। परंतु सभी के द्वारा कुछ न कुछ सन्देश दिया जाता है।

नाटक की इन्हीं विशेषताओं के कारण इसका प्रयोग शिक्षा में भी किया जाने लगा है। शिक्षा में नाटक एक ऐसी संकल्पना है जिसको भारत के 'नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा' ने १९८९ ने शुरू किया था। एक अभिनेता-शिक्षकों का समूह छात्रों के साथ काम करता है। यह समूह अलग-अलग विद्यालयों के बच्चों के सामने रचनात्मक, पाठ्यक्रम आधारित नाटक प्रस्तुत करता है। इस माध्यम से 'थिएटर इन एजुकेशन' बच्चों की सोचने की और प्रश्न पूछने की क्षमता को बढ़ावा देता है।

इस तकनीक का प्रयोग दिल्ली के कई विद्यालय भी कर चुके हैं। हमारे विद्यालय की कक्षाओं में भी किसी न किसी तरीके से नाटक का प्रयोग होता है। इससे छात्रों को विषय ज़्यादा आसानी से समझ आते हैं और पढ़ने में आनंद भी मिलता है। हमारे विद्यालय में नाट्य और दूसरी कलाओं को अत्यधिक बढ़ावा दिया जाता है। इसके कारण छात्र अपने सोच व विचार प्रकट कर पाते हैं और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है । ऐसा ही एक अवसर: 'अंजलिका कपूर इंटर-हाउस ड्रामा फेस्टिवल' है, जो पिछले वर्ष शुरू किया गया था। जिसमे विभिन्न विद्यालयों के छात्र छात्राओं को नाटक के माध्यम से अपने विचार दूसरों के सामने प्रस्तुत करने का मौका दिया जाता है। इस वर्ष का विषय था 'ब्लैक और वाइट' जिसमें छात्रों ने जीवन के विभिन्न रंगों को दर्शाया व उन पर अपने विचार प्रकट किए । चारों प्रतिभागियों के नाटकों का सार पढ़ने के लिए कुछ पन्ने पलटिए!

काम्या यादव, १२

स्कूल वॉच

कविता लेखन प्रतियोगिता कक्षा 4
1- सारा मेहता
2-वाणी चोपड़ा और आन्या सूडा
3- अयान ढींगरा, आयशा ठाकुर और मिहीका बागला

सोशल साइंस निबंध लेखन प्रतियोगिता, कक्षा 5
1- दर्श पुरी
2- मायरा प्रसाद और आनंद लक्ष्मी चोपड़ा
3- जिया नूर सिंह, सुमाया बेरी और पृथ्वी राजन खन्ना

स्पीड मैथ, कक्षा 11
श्रेय बैद, अक्षत छजर और दिविज चांदना

मैप क्वेस्ट परिणाम - सीनियर स्कूल
कक्षा 6- अरमान जे. सरना, इनाया गुलाटी, गौरांग डेका, ईशान कपूर, जिया मित्तल, अद्वैता सहगल और सार्थक खोसला
कक्षा 7- तिष्या कासलीवाल, काव्यिनी गारोडिया, कात्यायनी झा, देवादित्या तोमर, आयुष भाटिया, प्रार्थना बत्रा, आरुष शाह, सूर्यवीर वैद्यनाथन, अंश मेहता, आमेर सिंह, सारा ईवा खोसला, पृथ्वी मेहता और आदर्श चौधरी
कक्षा 8- साना शर्मा, सिया गर्ग, रिश्नव थडानी, शिव्या पॉल और अद्वैत अय्यर
कक्षा 9- शुभम कलंत्री
कक्षा 10- राबिया गुप्ता और अयान सागर
कक्षा 11- अदित्या कपूर
कक्षा 12- दिग्जै सिंह रावत

अंजलिका कपूर इन्टर हाउस नाटक उत्सव

इस वर्ष ८ सितम्बर को 'अंजलिका कपूर इन्टर हाउस नाट्य उत्सव ' का दूसरा चरण प्रारंभ हुआ। वसंत मंच के माध्यम से दर्शकों ने सुख- दुख, हँसी - खुशी के भावों का भरपूर आनंद उठाया।

अंजलिका कपूर इन्टर हाउस नाट्य उत्सव मे रेड हाउस ने एक बहुत ही रोचक और मज़ेदार नाटक प्रस्तुत किया । नाटक में उन्होंने अपने विचारों पर एक अनोखी व विचित्र झलक दी । दिए गए विषय के अनुसार नाटक में उन्होंने पढ़ाई और किशोरावस्था की कठिनाइयों पर अधिक ज़ोर डाला और शराब जैसे अन्य हानिकारक पदार्थों पर भी चर्चा की । अंत में नाटक के सभी पात्रों ने मज़ाक के रूप में गानों पर नाच किया।

ग्रीन हाउस का "टू डाई और नॉट टू डाई" नामक नाटक जीवन के मध्य भाग संकट के विषय को प्रदर्शित कर रहा था। नाटक के द्वारा संजीव पटेल एवं उसके परिवार के सदस्यों की कहानियाँ बताई गई थी। संजीव इस संकट का शिकार बनकर अपनी साधारण जिंदगी से परेशान था। उसकी पत्नी, बेटी, बेटा एवं नौकर चिंतित होकर सोचने लगे कि वह आत्महत्या करने जा रहा हैं। इस नाटक ने एक हास्य तरीके से इस संकट का बेहतरीन प्रदर्शन किया।

ब्लू हाउस का 'थैंक्स फॉर शेयरिंग' नामक नाटक, महाभारत व इलियड की कथाओं को प्रदर्शित कर रहा था। नाटक की प्रस्तुति से वे यह सन्देश भेजना चाहते हैं कि हर कहानी को अलग नज़रिये से देखा जा सकता है और कोई भी नजरिया सही या गलत नहीं हैं। ब्लू हाउस का नाटक एक मनश्चिकित्सक के कार्यालय में था, जहाँ द्रौपदी, दुर्योधन और ट्रोजन युद्ध से जुड़े हेलेन और पैरिस भी प्रस्तुत थे। उनका नाटक बहुत ही मज़ेदार था।

येलो हाऊस के छात्रों ने एक प्रभावशाली नाटक, 'द पेंटिंग' प्रस्तुत किया, जिसने तीन किशोरों की कहानी को प्रस्तुत किया जिसका विषय था- तीन जवान व्यक्ति, जो समाज के दबाव के कारण अपने जीवन का रंग खो देते है।

तीन विरोधी हुए युवआओं की मन की बात पर आधारित, 'द पेंटिंग' दिखाती है, कि सामाजिक दबाव के कारण आज कल की ज़िन्दगी से रंग गायब हो गया है। एक समलैंगिक लड़का, जो समाज द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है और जिसका मज़ाक उड़ाया जाता है, अपनी दुखी दुनिया में रंग वापस लाने की कोशिश में लग जाता है। विश्वविद्यालय की तैयारी में लगी हुई, सामाजिक उम्मीदों को पूरा करने की कोशिश में एक लड़की अपने आप को खो देती है। सामाजिक उम्मीदें आज कल इतनी प्रभावित हो चुकी है, कि हम अपने तरीके से नहीं, लेकिन दूसरों की उम्मीदों के आधार पर अपनी ज़िन्दगी जीतें है। पारिवारिक समस्याओं के बोझ में दबा हुआ एक बालक, चाहते हुए भी अपनी ज़िन्दगी खुशहाली से नहीं जी सकता। इन सारी समस्याओं को अपने अंदर दबाकर रखने के कारण, इन तीनों की दुनिया काले व सफ़ेद रंगों में रह गई है। इन सब समस्याओं का एक ही हल है- हिम्मत न हारना और अपना जीवन अपने हाथों में लेना।

जी.एस.टी - जी.एस.टी - जी.एस.टी ! आखिर, यह जी.एस.टी बिल क्या है?

सरल शब्दों में, अब लगभग सभी वस्तुओं और सेवाओं पर एक नया टैक्स (कर) लगेगा- जी.एस.टी । जी.एस.टी बिल २०१६, ३ अगस्त हमारे भारत देश में राज्यसभा में पारित किया गया। लोकसभा में यह बिल मई २०१५ में पारित किया गया था जिसके आगामी अप्रैल से लागू होने की उम्मीद है।

अब सवाल उठता है कि जब टैक्स दोनों ही स्थितियों में देना है तो आखिर इसमें नया क्या है और इससे जनता को क्या फायदा होगा? देश के कर सम्बंधित ढाँचे में स्वतंत्रता के बाद यह एक बहुत बड़ा सुधार है, जो व्यापक पैमाने पर पूरे देश के निर्माता, व्यापारी और वस्तुओं और सेवाओं के उपभोगताओं पर लगेगा। यह टैक्स अन्य टैक्सों को हटा देगा, जो कि केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा लगाए गए हैं। इसका फायदा आम लोगों को होगा जैसे- इससे पूरे देश में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें लगभग एक हो जाएंगी, लागत घटेगी, उपभोक्ताओं के लिए सामान सस्ता होगा, आदि। पूरे देश में एक ही दर से टैक्स लगेगा। जी.एस.टी लागू होने के बाद वस्तुओं और सेवाओं पर अलग-अलग लगने वाले सभी कर एक ही कर में समाहित हो जाएंगे।
इसके दो भाग हैं- १.) केंद्र द्वारा लगाया जाने वाला-केंद्रीय जी.एस.टी. २.) राज्य द्वारा लगाया जाने वाला -प्रांतीय जी.एस.टी.
विभिन्न केंद्रीय करों और राज्य करों को मिलाना या समाप्त करना और उनके स्थान पर एक नए कर लगाने से दोहरे करारोपण (डबल टैक्सेशन) और 'केसकेडिंग' का प्रभाव इफ़ेक्ट खत्म होगा और इसका फायदा राष्ट्रीय बाज़ार को मिलेगा। अगर एक आम आदमी को दृष्टिकोण से देखा जाए, तो उसके द्वारा चुकाए जाने वाले सभी करों की मात्रा में कमी आ जाएगी। तो क्या कहना है आपका!

प्रकृति महाजन,7

इंटर-स्कूल मल्टीमीडिया प्रतियोगिता

मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल

'मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल' के चलचित्र में स्कूल की कुछ छात्राएँ समीप के एक गाँव जाती है। "जाहे" गांव के लोग उन्हें अपनी कथा बताते हैं | उन्हें पीने का पानी तक नहीं मिलता हैं क्योंकि नए कारखानों ने भूजल को प्रदूषित कर दिया हैं |उनकी आँखों में आँसू हैं, पर पीने के लिए एक भी बूँद नहीं है | मेयो कॉलेज की छात्राओं का इरादा है कि कुछ ही सालो में पानी ही एक राज्य की शक्ति का मापदंड होगा | एक राज्य की शक्ति का मापदंड होगा |

वसंत वैली स्कूल

वसंत वैली स्कूल की फ़िल्म .... एक लड़के को प्रस्तुत करती है जो एक बारिश में नृत्य पार्टी करना चाहता था । इस कारण उसका मित्र उसे एक झोंपड़-पट्टी में ले जाता है । दर्शकों को दिखाया जाता है कि वहाँ के निवासी पानी और नल की अत्यधिक कमी के कारण सदा परेशानी में रहते हैं- । यह भी दिखाया गया कि बचपन की सुंदरता पानी के झगड़े के कारण, छिनती जा रही है। इनका फिल्म का नाम था 'कागज की नाव' और उन्होंने एक सवाल प्रस्तुत किया था 'क्या आप इतने पानी में रह सकते हो?'

साधु वासवानी स्कूल

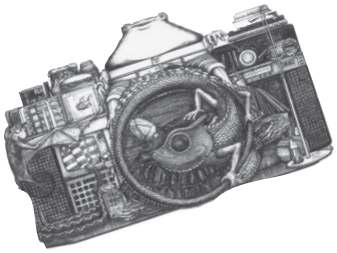

साधु वासवानी स्कूल ने हास्य का प्रयोग कर के पानी बचाने का महत्वपूर्ण सन्देश भेजा। उन्होंने हमें २०५० का एक कल्पित दृश्य दिखाया जहाँ पानी बहुत ही कीमती हो गया था। यह फिल्म बहुत ही मज़ेदार थी ।

पिक्सेल - ओ -ग्राफिक प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में १९ स्कूलों ने भाग लिया। प्रतियोगियों ने कई अच्छी तस्वीरें ली और उन्हें संपादित किया।

कुछ विचार :

"यह प्रतियोगिता बहुत ही अच्छी थी। विषय बहुत ही अनोखा था।"

"प्रतियोगिता का विषय और भी अच्छा हो सकता था।"

"यह स्कूल बहुत ही सुन्दर है और हमें बहुत ही सुन्दर तस्वीरें खीचने को मिली।"

'टेक-ओ-बाइट'

मल्टीमीडिया प्रतियोगिता के 'टेक-ओ-बाइट' दो चरण थे। पहले चरण में १६ टीमों ने भाग लिया । इस चरण में अन्य विषयों पर आधारित प्रश्न थे,जैसे कि कंप्यूटर सॉफ्टवेर,हार्डवेयर और आधुनिक टेक्नोलॉजी। पहले चरण के ४ सर्वोत्तम टीमों ने दूसरे चरण में भाग लिया-डीपीएस,राम कृष्ण पुरम,सेंट कोलम्बस स्कूल, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल,साकेत और जी डी गोयनका स्कूल ।इस चरण में बहुत सारे रोचक प्रश्न पूछे गए और प्रश्नोत्तरी के दर्शकों ने भी सहर्ष भाग लिया । अंत में, डीपीएस, राम कृष्ण पुरम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया,सेंट कोलम्बस स्कूल ने द्वितीय स्थान और एमिटी इंटरनेशनल स्कूल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

परिणाम

मल्टीमीडिया प्रतियोगिता
1st. मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल
2nd. वसंत वैली स्कूल
3rd. साधु वासवानी इंटरनेशनल स्कूल

टेक -ओ- बाइट
1st. दिल्ली पब्लिक स्कूल , आर. के. पुरम
2nd. सेंट कोलंबस स्कूल
3rd. एमिटी इंटरनेशनल स्कूल, साकेत

पिक्सेल - ओ -ग्राफिक
1st. टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार
2nd. जी डी गोयनका , वसंत कुंज
3rd. शिव नादर स्कूल

खेल - ओ -राजनयिक
1st. दिल्ली पब्लिक स्कूल , आर. के. पुरम
2nd. एमिटी इंटरनेशनल स्कूल, साकेत

लिखने का आनन्द

किसी लेखक ने सच ही कहा है कि 'लेखनी में तलवार से अधिक ताकत होती है।' एक अच्छा लेखक वही होता है जो पहले स्वयं खूब पढ़ता है, उस विषय के बारे में देखता है, समझता है, जानता है या उन हालातों को स्वयं भोगता है। केवल कल्पना करने से अच्छा नहीं लिखा जा सकता है। कुछ लोग पैसा कमाने के लिए लिखते हैं, कुछ प्रसिद्धि पाने के लिए या तो कुछ मजबूरी में लिखते हैं। लेकिन मन की गहराइयों और अपनी प्रसन्नता के लिए जो लिखते हैं, उनकी तुलना नहीं की जा सकती है।

कई लोग अपने भाव और अपने विचार लिखित रूप से और अच्छी तरह प्रकट कर सकते हैं। कई भाव कहने से ज़्यादा, लिखित में सुंदर लगते हैं। शायरी और गज़ल जैसे माध्यम शब्दों को भी एक अनमोल रुप देते है जो हमारे दिल को छू जाते हैं। अच्छे साहित्य ने समाज की सोच को बदला है, व्यवस्था में परिवर्तन किया है और समाज को जागरूक किया है। इतिहास ऐसे सैकड़ों उदाहरणों से भरा पड़ा है। अतः जब भी लिखिए, दिल से लिखिए, देखिएगा लोग दिल से पढ़ेंगे।

वान्या वासुदेव, 8

अंतरराष्ट्रीय दलहन वर्ष

संयुक्त राष्ट्र ने मानव स्वास्थ्य के लिए दालों के महत्त्व के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए वर्ष 2016 को अंतरराष्ट्रीय दलहन 'वर्ष २०१६ अंतरराष्ट्रीय दलहन वर्ष (आईवाईपी) के रूप में मनाए जायेगा',ऐसा संयुक्त राष्ट्र ने मानव स्वास्थ्य में दालों के महत्त्व के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए घोषित किया है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार प्रोटीन,फाइबर एवं अन्य आवश्यक पोषक तत्त्वों से भरपूर दालों को भोजन में आवश्यक रूप से शामिल किया जाना चाहिए। लोगों को प्रेरित करने के इस लक्ष्य से यह कदम उठाया गया है।भारत दुनिया में दलहन का सबसे बड़ा उत्पादक देश है लेकिन यहाँ इसकी खपत भी सबसे अधिक है और यह इसका दुनिया में सबसे बड़ा आयातक देश भी है।दालों की लोकप्रियता में तेज़ी से वृद्धि हुई है और वह एक पौष्टिक, बहुमुखी खाद्य पदार्थ के रूप में स्वस्थ आहार में एक आवश्यक भूमिका निभातीं हैं। दालें अद्वितीय हैं क्योंकि इन में उच्च कोटि के प्रोटीन और जरूरी अमीनो एसिड पाये जाते है। एक आधा कप पकी दाल में ९ ग्राम प्रोटीन की मात्रा होती हैं।

दालों में जटिल कार्बोहाइड्रेट होते हैं, जो फाइबर और प्रेबिओटिक्स से पेट को स्वस्थ रखते हैं और हमारी भूख को कम करते हैं। दालों के उच्च फाइबर रक्त में मौजूद कोलेस्ट्रॉल को घटाता है और पाचन में मदद करता है। प्रति दिन दाल का एक कप खराब कोलेस्ट्रॉल को ५ प्रतिशत तक कम कर देता है। इसका मतलब है कि दिल के दौरे और स्ट्रोक का खतरा भी कम हो जाता है।दालों में अधिक आवश्यक विटामिन और घने पोषक तत्व अपेक्षाकृत कम कैलोरी के साथ मिलते हैं। बीन्स में मैग्नीशियम होता है ,जो हमारी स्मृति को बढ़ाता है और एंटीओक्सादेंट्स विशेष रूप से प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा देतें हैं। ऊफ ! इतनी पढाई करने के बाद समझ आ रहा हैं कि मम्मी खाने की मेज़ से दाल खाए बिना क्यों उठने नहीं देती।

अद्वैता सहगल, 6

इनसैट 3-डी आर

नमस्कार, आज का मौसम...
आपने यह जानकारी कई बार सुनी होगी। यह जानकारी आपको भारत का इनसेट सैटेलाइट देता है। ८ सितंबर २०१६ को भारत ने इनसेट ३-डी आर लांच किया।
यह ४९.१३ मीटर लंबा राकेट सतीश धवन स्पेस सेंटर, श्रीहरिकोटा, आंध्र प्रदेश से एक जीएसएलवी (GSLV) फ-०५ राकेट पर लांच हुआ। इसका वज़न २२११ किलो है, और इसका जीवनकाल १० साल है। इससे पहले मौसम बताने वाले ३ और सैटेलाइट भारत ने लांच किए हैं - कल्पना १, इनसेट- ३अ और इनसेट- ३-डी। परंतु, इनसेट-३-डी आर इन सबसे ज़्यादा उन्नत है। यह भारत के अंतरिक्ष अन्वेषण प्रोग्राम के लिए एक और कदम है। भारत के अंतरिक्ष अन्वेषण प्रोग्राम (ISRO) ने कई चीज़ें हासिल कर ली हैं, जो और किसी देश का अंतरिक्ष प्रोग्राम नहीं कर पाया, जैसे कि भारत एक अकेला देश है जिसने अपने पहले मार्स मिशन पर सफ़लता प्राप्त की। मेरी आशा है कि भारत का अंतरिक्ष अन्वेषण प्रोग्राम ऐसे ही बढ़ता रहे! हमने इनसेट-३-डी आर को लॉंच करके अपने मौसम विभाग को तो सशक्त कर दिया, पर काश कोई ऐसा कुछ लॉंच कर दे कि ज़मीन-तौर पर भी अगली बारिश में हमारा शहर पानी-पानी न हो जाए!

आशावादी,
ऋष्नव थडानी, 8

फ़िनलैंड

सितम्बर के पहले सप्ताह में कक्षा ११ के कुछ छात्रों को छात्र-विनिमय कार्यक्रम के लिए , फ़िनलैंड जाने का एक अनोखा अवसर दिया गया था। इस एक सप्ताह में हम एक फिनिश परिवार के साथ रहे और उनके तौर-तरीके व रहन-सहन के बारे में जानकारी प्राप्त की । जिस शहर में हम ठहरे थे, 'हेलसिंकी', भले ही आकार और जनसँख्या में छोटा है, परंतु जैसे-जैसे हमने उसका समन्वेषण किया , वहाँ के लोगों और संस्कृति से परिचित हुए। ऐसा प्रतीत हुआ कि अलग होते हुए भी हम सभी इसी धरती के प्राणी हैं।

हम ४ दिन वहाँ के कुलोसारी विद्यालय गए, और इस समय में हम कई प्रकार की कक्षाओं में गए और कई किस्मों के शिक्षण शैलियों का अनुभव किया। वहाँ हमने देखा कि उनका मानना है कि जब छात्र एक आरामदायक वातावरण में होते हैं वे बेहतर काम करते हैं ।

अंत में, इस विनिमय कार्यक्रम ने कक्षा ११ के छात्रों को एक नए विषय को अनुभव करने का अवसर दिया। फ़िनलैंड ने हमारा खुले बाहों व मेहमान नवाज़ी से स्वागत किया।

श्रेय बैद, 11

कक्षा पॉच अ के बच्चे

सबसे अलग हैं।
कुछ हैं झूठे
कुछ हैं सच्चे।
सारे बच्चे हैं लोमड़ी से चतुर
अध्यापिका के सामने रहते गाय से सीधे
जब भी अध्यापिका बाहर जाती
सारे बच्चे शोर मचाते।
कुछ बच्चे तो इतने शैतान
करके शैतानी वो है हँसाते
मगर अध्यापिका को गुस्सा आता
तो बच्चे कक्षा से बाहर जाते
कुछ बच्चे चीते से फुरतीले
कुछ चींटी से परिश्रमी
हमारी कक्षा करती इतना अच्छा काम
उसमें नहीं होती एक भी कमी

अनिरूद्ध वत्स 5 - अ

हमारा राष्ट्र

जन गण मन है हमारा राष्ट्रीय गीत
टैगोर की कल्पना है इसमें सजीव।
हिन्दी हमारी मातृभाषा है
बापू हमारे राष्ट्रपिता है।
कमल है हमारा राष्ट्रीय फूल
इसे न जाना कभी भूल।
वन्दे मातरम है राष्ट्रीय गीत
मिल जाते है इसमें सुर संगीत।
मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी प्यारा
बाघ है राष्ट्रीय पशु न्यारा।
गंगा पवित्र नदी हमारी
लगती है सबको प्यारी।
रामायण गीता धार्मिक ग्रंथ हमारे
कुरान बाइबल भी है मस्तक पर धारे।
सबको समान अधिकार और मान
तभी तो है मेरा भारत महान

कायरा धर 4 - स

जीवन के रंग

जीवन के सात है रंग सिखाते जीने का ढंग।
पहला रंग यारी जिसमें भूल जाए दुनियादारी।
दूसरा रंग ममता हर मोड़ पर जिताने की है क्षमता।
तीसरा रंग परिवार जो रहे आपके साथ हर बार।
चौथा रंग पढ़ाई जिसने ज़िन्दगी रंगीन बनाई।
पॉचवा है प्यार करते जो हम सबसे है यार।
छठा है सुख़ सातवॉ दुख
चलते रह तू और न रूक।

'वीवस' इंडियन म्यूज़िक

अगर सूरज देवता छुट्टी पर जाएँ तो

क्या आपने कभी सोचा है कि अगर सूरज देवता छुट्टी पर जाएँ तो क्या होगा? चलो मैं बताती हूँ। अगर सूरज देवता छुट्टी पर जाएँगे तो धरती पर सब जगह अंधकार हो जाएगा और हमेशा रात हीं रहेगी! कभी सुबह ही नहीं होगी! फ़िर बच्चे स्कूल नहीं जा पाएँगे और तो और धरती पर रहने वाले लोग सोते हीं रह जाएँगे। सब पौधे भी मर जाएँगे! जानवर घास नहीं खा सकेंगे और मर जाएँगे! लोग भी हवा नहीं पाकर मर जाएँगे! और फिर धरती पर कोई जीव जन्तु नहीं बचेंगे! अगर लोग नहीं बचेंगे सुबह मंदिर में भगवान की पूजा कौन करेगा? सब जगह अंधकार फैला होगा। धरती डरावनी दिखेगी। इसी कारण सूरज हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

मिहिका बाग्ला 4 - अ

ताज यात्रा- एक अनुभव

सुबह के छः बज रहे थे जब हम सब बस में चढ़े। सब बहुत खुश लग रहे थे। तीन - चार घंटों के सफ़र के बाद हम पहुँचे एतमाद-उद दौला। वहॉ हमने बंद फैकटरी देखी, बहती हुई यमुना भी देखी। वहॉ से हम होटल गए। खाना खाकर कमरे में आराम किया। उसके बाद हम गए ताज के पीछे प्रकृति सैर के लिए। हमने अद्भुत चिड़ियॉ और पेड़ पौधे देखे। और तो और हमने ताजमहल भी देखा लेकिन दूर से और पीछे से। उसके बाद गए आगरा किला। वापस होटल आए खाना खाया और सो गए। अगले दिन पॉच बजे उठे। मैं बहुत उत्सुक थी ताजमहल देखने के लिए। आखिर हम ताजमहल देखने के लिए निकल पड़े। वह बहुत सुंदर और बड़ा था। मुझे यह यात्रा बहुत ही अच्छी लगी। काश मैं फिर से जा सकती।

अस्मारा डैंग 4 - स

सुर वाणी की बेटी हिन्दी
आज़ादी की परिभाषा है
हम सबकी आधार शिला यह
जन - जन की अभिलाषा है।

फूल

गए हम स्कूल
देखें हमने बहुत से फूल
और उनमें थे बहुत से शूल
हमने फिर देखा पड़ा है त्रिशूल
फिर दिन खतम हुआ
जब हम गए पूल और बन
गए कूल

आरूष कपूर

मेरी मॉ

मेरी मॉ करती है मुझे बहुत प्यार
कहती है मैं हूँ उनका यार।
उनके हैं हिरनी सी ऑखें
और कोयल सी आवाज़।
वो हर पल देती मेरा साथ
और करती है पूजा पाठ।
उनका दिमाग रहता हरदम बर्फ सा ठंडा
इसलिए घर में होता नहीं कोई दंगा।
रेशम से है उनके बाल
हिरनी जैसी है उनकी चाल
मेरी मॉ करती है मुझे बहुत प्यार
कहती है मैं हूँ उनका यार।

अन्नत वीर 5 - ब

सहपठन कक्षा चार व नर्सरी

गाने का अंदाज़ा लगाओ!

गानों के बोल हैं अंग्रेज़ी, पर आज अंदाज़ देसी। बूझो तो जाने...

1. एक और बार मेरे जाने के पहले, उच्ची शक्ति के पास मेरे ऊपर पकड़ है।

2. आज रात को मज़े करने के लिए मुझे डॉलर बिल की ज़रुरत नहीं है। मुझे पैसों की बिलकुल ज़रुरत नहीं है, जब तक मैं बीट को महसूस कर सकती हूँ। मुझे पैसों की बिलकुल ज़रुरत नहीं है, जब तक मैं नाच रही हूँ।

3. अगर तुम्हे लग रहा है कि तुम डूब रहे हो, तो मैं सीधा कूद के आ जाऊँगा, ठण्डे-ठण्डे पानी में तुम्हारे लिए।

4. हम अब बात नहीं करते, हम अब बात नहीं करते, हम अब बात नहीं करते है, जैसे हम पहले करते थे। हम अब हसतें नहीं, वोह सब किस लिए था, ओ! अब हम बात पहले की तरह नहीं करते!

5. एक बार मैं साथ साल का था, मरी माँ ने मुझसे बोला, दोस्त बनाओ वर्ना तुम अकेले हो जाओगे।

6. मैं तुम्हे कभी नही भूलूँगी, तुम हमेशा मेरे पास रहोगे, जब से मैं तुम्हे मिली हूँ, मुझे पता था की जब तक मैं मरूँगी, मैं तुम्हे प्यार करती रहूँगी।

7. मैं तुमसे नफ़रत करती हूँ, मैं तुमसे प्यार करती हूँ। मुझे नफरत है की मैं तुमसे प्यार करती हूँ। मुझे ऐसा नहीं करना है पर मैं तुम्हारे आगे किसी और को नहीं डाल सकती हूँ।

तन्वी बहल व अनुष्का क्लेज़,9

1.One Dance- Drake, 2.Cheap Thrills- Sia, 3. Cold Water- Major Lazer ft. Justin Bieber, 4.We Don't Talk Anymore- Charlie Puth ft. Selena Gomez, 5. Seven Years- Lucas Graham, 6. Never Forget You- Zara Larsson ft. Mnek, 7. I Hate You, I Love You- Gnash ft. Olivia

सहर

अम्बर में जागते सूर्य को
गीत-मग्न कोयल का प्रणाम,
जो गीत घम को ही घुला दे
उस गीत को मेरा सलाम।

प्रातः की शान्ति भंग न कर तू
ध्यान में अब मन लगा,
हाथ जोड़ मस्तक बढ़ा तू
स्वयं आए हैं खुदा।

हर डाल पर हर नवीन पत्ता,
भय से निकलता है बाहर
इंसान क्यों इस कदर तूने,
किया अपनी माँ पर वार?

हे मनुष्य अपने अन्धकार में,
तू ने अपना बल गवा,
इंसान, इंसानियत दिखाकर,
सिर झुका तू सिर झुका।

सोहम कक्कर, 10

रोचक तथ्य

प्राचीन काल से हिंदी को अलग-अलग रूपों में जाना गया है। हिंदी का सबसे प्राचीन रूप 'अपभ्रंश' माना जाता है। सन् ४०० में कालिदास ने अपभ्रंश भाषा में एक नाटक लिखा था, जिसका नाम 'विक्रमोर्वशीयम्' था।

- हिंदी दक्षिण एशिया के बाहर भी बोली जाती है। हिंदी के श्रोता फीजी, मॉरिश्यस और केंद्रीय/ दक्षिण अमरीकी देशों (जैसे गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो) में भी मौजूद है।

- सन् १८८१ में ,ब्रिटिश इंडिया में, बिहार सबसे पहला राज्य बना, जिसने हिंदी को अपनी अधिकारक भाषा बनाया।

- आज, हिंदी कम से कम ५० करोड़ व्यक्तियों के द्वारा मातृ भाषा के रूप में बोली जाती है।

- 'हिंदी' एक पारसी शब्द है जिसका मतलब है 'सिंधु नदी की भूमि की भाषा' ।

जय जगन्नाथ, 11

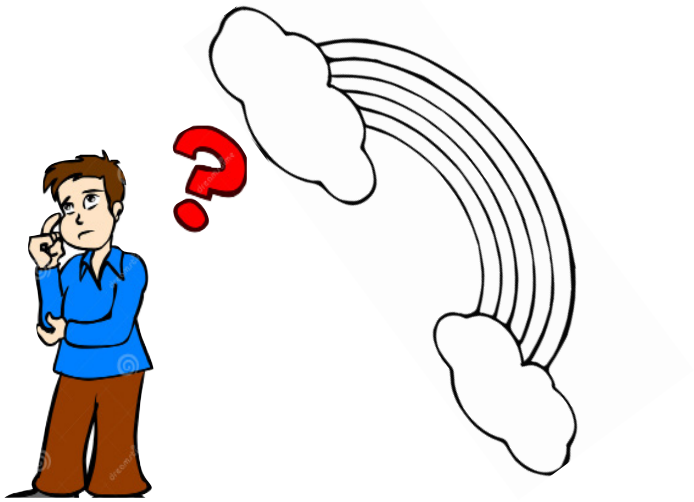

संपादक समिति

अनुष्का क्लेज़, दारिनी चंडोक, तन्वी बहल, सना कपूर, आर्येन साध, साहिल कुमार, राबिया गुप्ता, अदिति सिंह, आरूषी भुटानी, असीस कौर, इशिता मल्होत्रा, ज़ोया हसन, आदित्य कपूर, जय जगन्नाथ, अनन्या जैन, काम्या यादव, निकिता धवन, रिया कोठारी

मुख्य संपादक - सरीना मित्तल